3 सेठ गोविन्ददास

जीवन-परिचय—सेठ गोविन्ददास का जन्म सन् 1896 ई0 में मध्य प्रदेश राज्य के जबलपुर शहर में हुआ था। इन्होंने घर पर रहकर ही हिन्दी और अंग्रेजी भाषा का ज्ञान प्राप्त किया था। इनके घर का वातावरण आध्यात्मिकता की भावना से परिपूर्ण था। बाल्यावस्था से ही आप अपने परिवार के बीच रहते हुए वल्लभ सम्प्रदाय के धार्मिक उत्सवों, रास लीलाओं और नाटकों का आनन्द लेते रहे। नाटक लिखने की प्रेरणा भी इन्हें यहीं से प्राप्त हुई। साहित्य में रुचि होने के साथ ही इन्होंने देश के स्वाधीनता-आन्दोलन में भी सक्रिय रूप से भाग लिया और अनेक बार जेल गये। अनेक रचनाएँ इन्होंने जेल में ही लिखीं। सन् 1947 ई0 में देश के स्वतन्त्र होने पर संसद् सदस्य हुए और जीवनपर्यन्त इस पद पर बने रहे। हिन्दी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने के आप पक्षधर रहे। हिन्दी के प्रति आपका लगाव इसलिए था, क्योंकि यह भारत के विस्तृत भू-भाग में बोली जानेवाली ही भाषा नहीं थी, अपितु स्वाधीनता-आन्दोलन की भाषा भी थी। सन् 1974 ई0 में आपका निधन हो गया।

लेखक-एक संक्षिप्त परिचय

- **जन्म**—सन् 1896 ई0।
- **स्थान**—जबलपुर (म0 प्र0)।
- संसद् सदस्य रहे।
- **पहला नाटक**—'विश्व-प्रेम'।
- **मृत्यु**—सन् 1974 ई0।

कृतियाँ—सेठ जी ने अधिकांशतः नाटक एवं एकांकियाँ ही लिखी हैं। 'विश्व-प्रेम' आपके द्वारा लिखा गया सर्वप्रथम नाटक है, जिसे अपने परिवार द्वारा स्थापित श्री शारदा भवन पुस्तकालय के वार्षिकोत्सव के लिए लिखा था। पाश्चात्य नाटककार बर्नार्ड शॉ, इब्सन व ओनील की नाट्य-शैलियों का आपके नाटकों पर विशेष प्रभाव परिलक्षित होता है, फिर भी आपके नाटकों की मुख्य धारा भारतीयता पर ही आधारित है। आपके नाटकों के विषय पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, राष्ट्रीय और राजनीतिक धरातल तक फैले हुए हैं। कुछ एकांकी एकपात्रीय हैं। भाषा पात्रानुकूल, सरल एवं सहज है। आप गाँधीवाद से भी प्रभावित रहे हैं। आपकी प्रमुख एकांकियाँ हैं—'सप्त रश्मि', 'एकादशी', 'पंचभूत', 'चतुष्पथ' और 'आप बीती जग बीती' आदि।

साहित्यिक अवदान—सेठ जी ने लेखन के अतिरिक्त सांसद के रूप में भी आजीवन हिन्दी की उन्नति का मार्ग प्रशस्त किया। आपके एकांकी विचारों को जन्म देनेवाले हैं। काल-संकलन के प्रति आप अधिक सजग दिखायी देते हैं। अधिकांश एकांकी अनेक दृश्योंवाले हैं, जिनमें से कुछ में उपसंहार और उपक्रम की व्यवस्था है। आपके कुछ एकांकी व्यंग्य-विनोद-प्रधान, तो कुछ पात्रों की अन्तर्वृत्तियों का विश्लेषण करते दिखायी पड़ते हैं। आपके एकांकियों के कथानक जीवन्त एवं प्रभावपूर्ण हैं।

व्यवहार

पात्र-परिचय

रघुराजसिंह	:	एक ज़मींदार
नर्मदाशंकर	:	रघुराजसिंह के स्टेट का मैनेजर
चूरामन	:	एक किसान
क्रान्तिचन्द्र	:	चूरामन का पुत्र

पहला दृश्य

स्थान

नगर में रघुराजसिंह के महल की एक बालकनी

समय

प्रातःकाल

एक विशाल बालकनी का जो हिस्सा दिखायी देता है वह सुन्दरता से बना और सजा हुआ है। उसके खम्भे संगमरमर के हैं और रेलिंग बीड़ की रँगी हुई। फर्श आर्टीफिशल मार्बल का बना है, जिसमें रंग-बिरंगे बेल-बूटे हैं। छत पर चूने की नक्काशी है और उससे बिजली की कई बत्तियाँ झूल रही हैं, जिनके शेड बेशकीमती हैं। एक बिजली का सीलिंग फैन भी लटक रहा है। पीछे की रेलिंग के निकट ही वृक्षों के ऊपरी भाग दीख पड़ते हैं, जिससे जान पड़ता है कि बालकनी तीसरी या चौथी मंजिल पर है। बालकनी में लकड़ी का एक फैन्सी झूला, सोफा-सेट, टेबिलें आदि सुन्दरता से सजी हैं। कुछ चीनी-मिट्टी के गमले भी रखे हैं, जो भिन्न-भिन्न प्रकार के पौधों से भरे हुए हैं। बालकनी की बनावट और सजावट को देखने से वह किसी अत्यन्त सम्पन्न व्यक्ति के महल का एक भाग जान पड़ती है। रघुराजसिंह बालकनी के एक कोने में खड़ा हुआ एक छोटी-सी फैन्सी दूरबीन से पीछे के दरख्तों के परे की कोई वस्तु देख रहा है। रघुराजसिंह करीब 25 वर्ष की अवस्था का, गौर वर्ण, ऊँचा-पूरा, किन्तु दुबला सुन्दर मनुष्य है। वह एक ढीली बाँहों का पतला-सा कुरता और चूड़ीदार पाजामा पहने हुए है। उसका सिर खुला हुआ, जिस पर लम्बे बाल लहरा रहे हैं। छोटी-छोटी मूँछें हैं और आँखों पर मोटे फ्रेम का चश्मा। उसके नज़दीक ही नर्मदाशंकर खड़ा हुआ है। नर्मदाशंकर की उम्र लगभग 65 वर्ष की है। यह साँवले रंग, ठिगने कद का मोटा आदमी है। सिर पर बड़ा-सा साफ़ा बाँधे है और शरीर पर शेरवानी तथा पाजामा पहने है। उसके बड़े-से मुख में उसकी छोटी-छोटी आँखें और बड़ी-बड़ी सफेद मूँछें एक खास स्थान रखती हैं।

रघुराजसिंह : *(दूरबीन से देखते-देखते)* भोज की ठीक तैयारी हो रही है, मैनेजर साहब, बहन के विवाह में किसानों की यह दावत मैं विवाह का सबसे बड़ा काम मानता हूँ। *(कुछ रुककर)* कुल मिलाकर कितने किसान आवेंगे?

नर्मदाशंकर : पच्चीस हजार से कम नहीं, राजा साहब, आपने उन्हें मय बाल-बच्चों के आने का निमन्त्रण जो भेजा है।

रघुराजसिंह : *(दूरबीन से देखते-देखते ही)* क्यों, पहले की शादियों में किसानों को कुटुम्ब-सहित निमन्त्रित नहीं किया जाता था?

नर्मदाशंकर : कभी नहीं, सिर्फ़ मर्द बुलाये जाते थे, वे भी चुने हुए घरों के, और घर-पीछे एक आदमी।

रघुराजसिंह : *(दूरबीन से देखते-देखते ही)* पर यह गलत बात थी, मैनेजर साहब, सिर्फ मर्दों को, और वह भी चुने हुए घरों के तथा घर-पीछे एक ही आदमी को बुलाने का क्या अर्थ है?

नर्मदाशंकर : अर्थ तो सभी पुरानी बातों का है, राजा साहब! *(कुछ रुककर)* हाँ, एक कठिनाई जरूर है।

रघुराजसिंह : *(दूरबीन आँखों के सामने से हटाकर, नर्मदाशंकर की ओर देख)* कैसी कठिनाई, मैनेजर साहब?

नर्मदाशंकर : *(गला साफ़कर कुछ भर्राये हुए स्वर में)* आप माफ़ करें तो कहूँ।

रघुराजसिंह : आप मेरे पिताजी के समय से काम कर रहे हैं, शायद चालीस वर्ष आपको काम करते-करते बीत गये। मैं आपके सामने पैदा हुआ। पिताजी की मृत्यु के बाद मेरी नाबालगी में आपने ही कुल काम किया, आज भी आप ही मैनेजर हैं, आपको मैं अपना बुजुर्ग मानता हूँ; आपको कोई बात कहने के पहले माफ़ी माँगने की जरूरत है?

नर्मदाशंकर : मैं आपकी कृपा का हाल जानता हूँ, राजा साहब, इसीलिए आज कुछ कहने की हिम्मत कर रहा हूँ। जो-जो बातें पहले होती थीं उनके कारण ही *(बालकनी की ओर इशारा कर)* ये महल-महलात, यह वैभव और ऐश्वर्य नज़र आता है। विवाह में घर-पीछे एक किसान और वह भी चुने हुए घरों के किसानों को, निमन्त्रण देने का सवाल नहीं है, प्रश्न है कार्य की सारी पद्धति का।

रघुराजसिंह : अच्छा, तो जिस पद्धति से मैं काम कर रहा हूँ वह आप मुनासिब नहीं समझते?

नर्मदाशंकर : *(सहमे हुए स्वर में)* बात तो ऐसी ही है और समय-समय पर मैं अपनी राय का संकेत भी करता आया हूँ।

रघुराजसिंह : *(कुछ याद करते हुए)* हाँ, मुझे याद आ रहा है। काम सँभालते ही जब मैंने किसानों पर का सारा कर्ज़ माफ किया तब वह बात आपको पसन्द नहीं आयी थी।

रघुराजसिंह : *(विचारते हुए)* परन्तु आखिर उस कर्ज में से कितना कर्ज वसूल होता?

नर्मदाशंकर : सवाल कर्ज़ की वसूली का नहीं है।

रघुराजसिंह : तब?

नर्मदाशंकर : किसानों पर उस कर्ज़ के कारण दबाव था, वह चला गया।

रघुराजसिंह : ओह! तो अपना कोई फायदा न होने पर किसानों को कुचलकर रखना ही पुरानी पद्धति का अर्थ है।

नर्मदाशंकर : नहीं, राजा साहब, ऐसी बात नहीं है।

रघुराजसिंह : तब?

नर्मदाशंकर : बिना किसानों पर दबाव रखे हम ज़मींदारी से कोई लाभ उठा ही नहीं सकते।

(कुछ देर निस्तब्ध)

रघुराजसिंह : *(गम्भीरता से विचारते हुए)* और जिन ज़मीनों पर ज्यादा लगान था, मेरा उनका लगान घटाना भी आपको पसन्द न आया होगा।

नर्मदाशंकर : किसी ज़मीन पर ज्यादा लगान था ही नहीं, राजा साहब।

रघुराजसिंह : किसी ज़मीन पर ज्यादा लगान नहीं था?

नर्मदाशंकर : किसी पर भी नहीं।

रघुराजसिंह : तो जो किसान इतना रोते और बिलखते थे, वह सब उनका ढोंग था?

नर्मदाशंकर : बिल्कुल ढोंग, राजा साहब।

रघुराजसिंह : इतने मनुष्य झूठे आँसू बहाते थे?

नर्मदाशंकर : आप इन किसानों से अभी वाकिफ नहीं हैं, राजा साहब, ये क्या-क्या कर सकते हैं, आप जानते नहीं। आँखों में दवा डाल कर ये आँसू बहा सकते हैं।

(कुछ देर फिर निस्तब्धता)

रघुराजसिंह : *(विचारते हुए)* और जिन गरीब किसानों को मैंने बिना कोई नज़राना लिये ज़मीन दी, वह भी गलती की?

नर्मदाशंकर : वे इतने ग़रीब थे ही नहीं, राजा साहब कि नज़राना न दे सकें।

रघुराजसिंह : पर कितने किसानों ने उनकी सिफ़ारिश की थी?

नर्मदाशंकर : चोर-चोर मौसेरे भाई, राजा साहब।

(फिर कुछ देर निस्तब्धता)

रघुराजसिंह : और आज विवाह के उपलक्ष्य में मैंने कुटुम्ब सहित किसानों को जो भोज दिया, इसमें क्या गलती है?

नर्मदाशंकर : किसानों का भोज खर्च का नहीं, आमदनी का कारण होता था, वह अब खर्च का कारण हो जायगा।

रघुराजसिंह : अर्थात्?

नर्मदाशंकर : राजा साहब, इस निमन्त्रण में सिर्फ़ सम्पन्न किसानों को बुलाया जाता था। घर-पीछे एक आदमी को निमन्त्रण दिया जाता था। एक मिठाई, एक नमकीन, एक साग, एक गायता और पूड़ी-कचौड़ी उन्हें खिला दी जाती थी। फ्री आदमी मुश्किल से चार आना खाता था। खाने वाले व्यवहार करते थे–कोई एक रुपया, कोई दो, कोई चार, कोई पाँच, कोई सात, कोई ग्यारह और कोई इक्कीस भी। आज के भोज में न जाने कितनी तरह की मिठाइयाँ, नमकीन, तरकारियाँ, रायते, मुरब्बे, अचार, चटनियाँ और भी न जाने क्या-क्या इन्हें खिलाया जायगा। सम्पन्न कम और दरिद्र अधिक आयेंगे, फिर उनका पूरा कुटुम्ब खायेगा। व्यवहार देने वाले कितने होंगे?

रघुराजसिंह : *(आश्चर्य से)* व्यवहार! आप इनसे व्यवहार लेंगे?

नर्मदाशंकर : *(और भी आश्चर्य से)* क्यों? व्यवहार नहीं लिया जायगा?

रघुराजसिंह : कभी नहीं।

(नर्मदाशंकर आश्चर्य से स्तम्भित-सा होकर रघुराजसिंह की तरफ देखता है। कुछ देर निस्तब्धता।)

नर्मदाशंकर : *(धीरे-धीरे अत्यन्त भर्राये हुए स्वर में)* लेकिन...लेकिन, राजा साहब, व्यवहार....व्यवहार न लेना तो उन किसानों...किसानों का भी अपमान...अपमान करना....।

दूसरा दृश्य

स्थान : गाँव के एक मकान का कोठा।

समय : प्रातःकाल।

साधारण लम्बाई-चौड़ाई का देहाती मकान का एक कोठा है। तीन ओर की दिखने वाली दीवालों पर गारे की छपाई है, जो छुई मिट्टी से पुती है। कहीं-कहीं दीवालें मैली हो गयी हैं। पीछे की दीवाल में ऊपर की तरफ दो छोटी-छोटी खिड़कियाँ हैं, जिनमें लकड़ी के भद्दे से जँगले हैं। खिड़कियाँ ऊपर होने के कारण खिड़कियों के बाहर क्या है, यह दिखायी नहीं देता। दाहिनी ओर की दीवाल में एक छोटा-सा दरवाजा है, जिसकी चौखट और किवाड़ देहाती ढंग के बने हैं। दरवाजा बन्द है। छत पर बाँसों का पटाव है, जिस पर गारा छपा हुआ है और छुई पुती हुई है। इधर-उधर से गारे की छपाई झड़ जाने के कारण बाँस दिखायी देते हैं, जमीन गोबर से लिपी हुई है। तीन तरफ खाली जमीन छोड़कर बीचोबीच पीछे की दीवाल से सटाकर एक लाल रंग की जाजम बिछी हुई है। जाजम इधर-उधर मैली हो गयी है और यत्र-तत्र फट भी गयी है। जाजम पर कई किसान बैठे हुए हैं। इनकी अवस्थाएँ भिन्न-भिन्न हैं और स्वरूप भी अलग-अलग लेकिन कपड़े सबके प्रायः एक से हैं। इनके कपड़ों के कारण देखने वालों को इनके किसान होने में कोई शक नहीं रह जाता। इस समुदाय में एक ही व्यक्ति ऐसा है जो किसान नहीं जान पड़ता। इसका नाम है क्रान्तिचन्द्र। क्रान्तिचन्द्र की अवस्था 22-23 वर्ष से ज्यादा नहीं है। वह साँवले रंग का, ऊँचा पूरा बलिष्ठ व्यक्ति है। उसकी बहुत बड़ी-बड़ी आँखें और कुछ सिकुड़े से ओंठ उसके मुख में एक खास स्थान रखते हैं। वह खाकी रंग की कमीज और निकर पहने है। सिर खुला हुआ है, जिस पर लम्बे सँवारे हुए बाल हैं। क्रान्तिचन्द्र के पास ही उसका पिता चूरामन बैठा है। चूरामन की उम्र करीब 60 वर्ष की है, उसका रंग भी साँवला है। सारा शरीर दुबला और मुख पिचका

हुआ जिसमें उसकी घुसी हुई आँखें उसके मुख को अत्यधिक करुण बना रही हैं। उसकी ओर अन्य किसानों की वेश-भूषा में कोई फर्क नहीं है, इतना ही अन्तर है कि वह कानों में सोने की मुरकियाँ पहने हुए है। क्रान्तिचन्द्र अत्यन्त क्रोध-भरी मुद्रा और अत्यधिक क्रूर दृष्टि से, जो उसकी बड़ी-बड़ी आँखों के कारण और ज्यादा क्रूर हो गयी हैं, चूरामन की तरफ देख रहा है और चूरामन जमीन की ओर। कभी-कभी वह क्रान्तिचन्द्र की तरफ दृष्टि उठाता है, पर ज्योंही वह देखता है कि क्रान्तिचन्द्र उसकी ओर देख रहा है, त्योंही वह अपनी दृष्टि फिर नीचे कर लेता है। बाकी के किसान कभी पिता और कभी पुत्र की तरफ देखते हैं। कोठे में एक विचित्र प्रकार का सन्नाटा छाया हुआ है।

क्रान्तिचन्द्र : *(धीरे-धीरे)* तो निमन्त्रण के ठीक समय तक हम लोग इसी प्रकार मौन बैठे रहेंगे और बाहर बैठे हुए सब लोग हमारे निर्णय की प्रतीक्षा करते रहेंगे?

(कोई कुछ नहीं बोलता। फिर निस्तब्धता)

क्रान्तिचन्द्र : *(कुछ देर बाद, उठते हुए)* अच्छी बात है, आप लोग इसी प्रकार बैठे रहें, मुझे जो कुछ करना ठीक जान पड़ता है, मैं जाकर करता हूँ। *(खड़ा होता है।)*

चूरामन : बैठ, बैठ रेवापरसाद! सुन तो।

क्रान्तिचन्द्र : *(खड़े-खड़े ही, क्रोध से)* मेरा नाम रेवाप्रसाद नहीं है, पिताजी, मैंने कई बार आपसे कह दिया, मैं न किसी का प्रसाद हूँ न किसी का दास।

चूरामन : *(डरते-डरते)* भूल गया, भूल गया, पर तू बैठ तो, किरान्ती चन्दर।

क्रान्तिचन्द्र : *(कुछ शान्ति से)* पर बैठकर करूँ क्या? यहाँ तो सभी ने मौन व्रत धारण कर रखा है।

चूरामन : मउन बिरत की बात नहीं है, बेटा, तूने पिरसन ही ऐसा रखा है कि जवाब सरल काम थोड़ई है।

क्रान्तिचन्द्र : *(बैठते हुए)* मैंने ऐसा प्रश्न रखा है? पिताजी, पिंजरे में बन्दी पक्षी के उड़ने के लिए यदि पिंजरे का द्वार खोल दिया जाय तो द्वार खोलनेवाला कोई समस्या खड़ी नहीं करता। अंधकार में रहने वाले व्यक्ति को यदि प्रकाश में ले आया जाय तो प्रकाश में लाने वाला कोई भूल नहीं करता।

(कोई कुछ नहीं बोलता। फिर निस्तब्धता)

क्रान्तिचन्द्र : *(फिर उठते हुए)* मैं देखता हूँ, यहाँ इस प्रश्न का निर्णय न हो सकेगा। *(खड़ा होता है।)*

एक किसान : तब कहाँ होगा, भैया?

दूसरा किसान : हाँ, सब गाँवन के पंच तो हियाँ बइठे हैं। यहाँ निरनय न होई तो कहाँ होई?

क्रान्तिचन्द्र : *(खड़े-खड़े ही)* दासता की शृंखलाओं में वर्षों नहीं नहीं युगों, नहीं नहीं पीढ़ियों तक बँधे रहने के कारण पंचों में इस प्रश्न के निर्णय की सामर्थ्य नहीं रह गयी है।

तीसरा किसान : तब निरनय कौन करेगा?

क्रान्तिचन्द्र : बाहर खड़ी हुई किसान जनता।

चूरामन : बैठ रेवा, बैठ तो...

क्रान्तिचन्द्र : *(क्रोध से)* फिर...फिर...रेवा, पिताजी...

चूरामन : अरे, भैया, बुढ़ा गया हूँ, भूल जाता हूँ रे।

क्रान्तिचन्द्र : *(कुछ शान्त होते हुए)* पर भूल और उस पर भी भूल, भूलों की झाड़ियों ने ही तो हमारी यह दशा कर दी है। मूल की बातों में भूल होना सबसे बड़ी भूल है।

चूरामन : अच्छा, तू बैठ तो।

(क्रान्तिचन्द्र बैठ जाता है फिर कोई कुछ नहीं बोलता। कुछ देर निस्तब्धता।)

क्रान्तिचन्द्र : *(कुछ देर बाद)* फिर सन्नाटा! आप लोगों को हो क्या गया है? एक छोटी-सी बात के निर्णय में इस प्रकार का पशोपेश।

चूरामन : छोटी बात! यह छोटी बात है?

क्रान्तिचन्द्र : और क्या है? जमींदार के निमन्त्रण में जाकर गन्दे घी की मिठाई, चोकर की पूड़ियाँ और सड़े साग खाना छोटी बात नहीं तो कोई बड़ी बात है? फिर यह सब भी किस अपमान से किया जाता है। मुझे अपने छुटपन के एक ऐसे ही निमन्त्रण का स्मरण है। महल के फाटक से ही हमारा अपमान आरम्भ हुआ था। सदर फाटक में तो हम लोग घुसने ही न पाये। एक पुराना टूटा-फूटा फाटक हमारे लिये खोला गया था। हरेक को प्रवेश के पहले अपने निमन्त्रण की टिकट दिखानी पड़ती थी। आपको निमन्त्रण था, पिताजी, मुझे नहीं, इसलिए आपके कितने गिड़गिड़ाने और अनुनय-विनय करने पर मुझे घुसने दिया गया था। वह दृश्य आज भी अनेक बार दृष्टि के सामने घूम जाता है। हम लोगों को घुड़साल में खिलाया गया था, घुड़साल में। घोड़ों की लीद और मूत की दुर्गन्ध से नाक सड़ी जाती थी। उस दुर्गन्ध को इतने वर्षों के पश्चात् भी मेरी नाक तो नहीं भूली है। फटी पत्तलों और फूटे सकोरों में हमें परसा गया था। परसगारी करने वाले हमें इस प्रकार परसते थे, मानो हम कंगर हों और वह भोजन करा हम पर महान् उपकार किया जा रहा हो। भोजन की सामग्री का स्वाद अभी भी मेरी जीभ नहीं भूली है–कह नहीं सकता, घी में मिठाई बनी थी या किसी गन्दे परनाले के पानी में, दही का रायता था या दुई मिट्टी का, साग था कदाचित् सप्ताहों का सड़ा हुआ और पूरियाँ आटे की भी तो नहीं थीं, लकड़ी के बुरादे की हो सकती हैं ऐसे भोजन के पश्चात् हमारे गरीब भाइयों को जो खनाखन व्यवहार का रुपया देना पड़ा था, उसका शबद अभी भी मेरे कानों में गूँज उठता है। पिताजी आप कहते हैं ऐसे निमन्त्रण में न जाने का निर्णय छोटी बात नहीं है; बड़ी, बहुत बड़ी बात है! ओह!

चूरामन : बेटा, पिरसन! मान-अपमान और भोजन का नहीं है।

क्रान्तिचन्द्र : तब?

चूरामन : ज़मींदार का न्योता है, बेटा ज़मींदार का।

क्रान्तिचन्द्र : ऐसा! तो जो आपको लूट रहा है, जो आपका खून पी रहा है, उस लुटेरे, उस डाकू के भय से आप निमन्त्रण में जा रहे हैं?

चूरामन : *(भयभीत स्वर में)* बेटा...बेटा...कैसी...कैसी बातें कर रहा है, क्या पागल हो गया है? इसकूल और कलेज में जाकर क्या लड़के इस तरा से पगले हो जाते हैं? भींतों के भी कान होते हैं, बेटा...थोड़ा...

क्रान्तिचन्द्र : *(आश्चर्य से)* सच्ची बात कहने में काहे का डर, पिताजी? दूसरों के श्रम पर बिना कोई श्रम किये जो तरह-तरह के गुलछर्रे उड़ाते हैं, वे लुटेरे नहीं तो क्या हैं? श्रम करने वाले भूखे और नंगे रहते हैं और ये आरामतलब बिना कोई काम किये अलमस्त। ऐसे लोग खून चूसने वाले नहीं तो और क्या कहे जा सकते हैं। स्कूल और कॉलेज यदि सच्ची वस्तुस्थिति दिखा दें तो क्या वे कोई अपराध करते हैं? दीवालों के कान होते हैं! पिताजी, मैं डरता नहीं हूँ, भय से अधिक बुरी वस्तु मैं संसार में और कोई नहीं मानता। ईंट-चूने, मिट्टी-गारे की दीवालों के नहीं, मनुष्यों के समूहों के सामने मैं ये सब बातें कहने, ऊँचे-से-ऊँचे स्वर में कहने के लिए तैयार हूँ, तैयार ही नहीं, पिताजी, मैंने कही है स्वयं जमींदार के सम्मुख कहने, उसे लिखकर भेजने के लिए प्रस्तुत हूँ।

चूरामन : शिव, शिव! शिव, शिव!

एक किसान : सब धान बाइस पसेरी नहीं होतीं, सब जमींदार एकइसे नहीं होते।

दूसरा किसान : फिर हमारे इन ज़मींदार ने तो काम हाथ में लेते ही हम पर न जाने कित्ते उपकार किये हैं।

तीसरा किसान : इस न्योते को ही देखो न? पहले ब्याह-सादी में छाँट-छाँट कर, छटे घरों के एक-एक आदमी को न्योता जाता था, अब पूरे-के-पूरे गाँवों को न्योता, हर किसान को, किसान के पूरे कुनबे को।

क्रान्तिचन्द्र : ठीक, जान पड़ता है, जमींदार आप सबकी आँखों में धूल डालने में सफल हो गया। यद्यपि मैं कॉलेज से हाल ही में आया हूँ, पर विद्यार्थी की हैसियत से यहाँ आता-जाता तो रहता ही था। जमींदार के काम

सँभालने के पश्चात् उसके द्वारा जो उपकार हुए हैं उन सबका वृत्त में भली-भाँति जानता हूँ और सिद्ध कर सकता हूँ कि उसकी जिन बातों को आप उपकार मानते हैं वे उपकार की न होकर यथार्थ में आपके अपकार की बातें हैं।

एक किसान : *(व्यंग्य से)* ऐसा!

क्रान्तिचन्द्र : जी हाँ। और जो कुछ मैं कहता हूँ उसकी सत्यता सिद्ध करने की सामर्थ्य भी रखता हूँ। उसकी पहली बात जिसे आप उपकार समझते हैं, यही है न कि उसने आप पर जो कर्ज़ था, उसे छोड़ दिया।

एक किसान : हाँ। *(दूसरों की ओर देखकर)* क्यों, भइया।

कुछ किसान : *(एक साथ)* हाँ...हाँ।

क्रान्तिचन्द्र : आप बता सकते हैं, इसमें से कितना कर्ज ऐसा था, जो वसूल हो सकता।

(कोई कुछ नहीं बोलता। कुछ देर निस्तब्धता)

क्रान्तिचन्द्र : जिस वर्ष कर्ज की यह छूट की गयी उस वर्ष गर्मियों की छुट्टी में मैंने अनेक गाँवों में जा-जाकर उन किसानों की स्थिति की जाँच की थी, जिन पर कर्ज छोड़ा गया था। आप सच मानिए, इन किसानों में से सौ में से निन्यानबे ऐसे थे, जिनके पास जमींदार के कर्ज का ब्याज चुकाते-चुकाते भोजन बनाने के टूटे-फूटे बर्तन तक न रहे थे। खेती का जो इक्का-दुक्का सामान था, कंकाल हुए बैल थे, सड़ा या पतला-सा बीज था, वह कानून के अनुसार कर्ज में नीलाम कराया नहीं जा सकता था। फिर जमींदार कर्ज वसूल कहाँ से करता?

एक किसान : पर सौ में एक से तो वसूल कर लेता।

क्रान्तिचन्द्र : यही तो आप समझते नहीं। सौ में से एक से पुराना कर्ज़ वसूल करने की अपेक्षा, पुराना कर्ज छोड़ उन्हें नया कर्ज देकर उनसे ब्याज वसूल करना जमींदार के लिए कहीं अधिक लाभप्रद था।

(सब किसान एक-दूसरे का मुख देखते हैं। फिर सब चूरामन की ओर देखते हैं। वह कुछ नहीं बोलता। कुछ देर निस्तब्धता।)

क्रान्तिचन्द्र : *(कुछ देर बाद)* दूसरा उपकार, जो इस जमींदार का आप मानते होंगे, वह कदाचित् उसका कुछ जमीनों का लगान कम करना है?

एक किसान : हाँ, हाँ, यह तो उनका बड़ा भारी काम है।

कुछ किसान : *(एक साथ)* हाँ...हाँ...हाँ...

क्रान्तिचन्द्र : यहाँ भी आप लोग भूल में हैं।

कुछ किसान : *(एक साथ)* कैसे...कैसे?

क्रान्तिचन्द्र : इस सम्बन्ध में भी मैंने जाँच कर ली है। जिनकी ज़मीनों पर लगान कम किया गया, उनमें से सौ में से निन्यानबे किसानों पर बकाया लगान की नालिशें की गयी थीं। ज़मीनों के अतिरिक्त उनके पास कुछ भी नहीं था। बेदखलियाँ हो सकी थीं, परन्तु वे जमीनें इतनी बुरी दशा में थीं कि बेदखली के पश्चात् कोई उन्हें लेता ही नहीं। जमींदार घर में कितनी जमीन जोतता, अतः लगान कम करके उन्हीं किसानों के पास जमीन रहने देना जमींदार के लिए ज्यादा फायदेमन्द था।

(फिर सब किसान एक-दूसरे का मुख देखने लगते हैं और फिर सब चूरामन की ओर देखते हैं। कोई कुछ नहीं बोलता। कुछ देर निस्तब्धता।)

क्रान्तिचन्द्र : आप थोड़ा-सा ध्यान देकर जमींदार की कार्रवाइयों को देखें तो उनका सच्चा रहस्य आपकी समझ में आ जाय।

(फिर कुछ देर निस्तब्धता)

क्रान्तिचन्द्र : तीसरा काम जो इस जमींदार ने किया, वह है कुछ किसानों को बिना नजराने के मुफ्त में जमीनें देना।

(कुछ रुककर)

कुछ किसान : *(एक साथ)* हाँ...हाँ...हाँ...हाँ...

क्रान्तिचन्द्र : मैं आपसे पूछता हूँ यदि जमींदार यह न करता तो करता क्या? आप नहीं जानते कि उसकी हजारों एकड़ जमीन पड़ती पड़ी है। बिना नजराने की जमीनें उठा देने से भी उसकी आमदनी बढ़ी है या घटी? मैंने इस सम्बन्ध में भी सारी बातों का पता लगाया है और इस काम में जमींदार की वार्षिक आय में कोई पच्चीस हजार रुपये की वृद्धि हुई है।

(सब लोग फिर एक-दूसरे की ओर देखकर चूरामन की तरफ देखने लगते हैं।
वह फिर कुछ नहीं बोलता। कुछ देर निस्तब्धता।)

क्रान्तिचन्द्र : अब विवाह के इस निमन्त्रण को ले लीजिए। आप समझते हैं कि छँटे हुए किसानों को ही निमन्त्रण न देकर, हर गाँव के हर किसान को निमन्त्रण दे, जमींदार ने आप सब पर बड़ा प्रेम दर्शाया है। मैं कहता हूँ कि इस दुर्भिक्ष के समय आप पर और विशेषकर गरीब किसानों पर, इससे बड़ा जुल्म सम्भव नहीं था। इसके पिता केवल सम्पन्न किसानों को बुलाते थे। उनसे व्यवहार वसूल होता था। अब सभी बुलाये गये हैं कुटुम्ब सहित। सबसे व्यवहार की वसूली होगी; एक-एक घर से नहीं, घर के प्रत्येक व्यक्ति से। चार आना खिलाकर चार रुपया वसूल किये जायँगे।

एक किसान : भाई, यह तो सच है।

कुछ किसान : *(एक साथ) हाँ...हाँ...हाँ...हाँ...*

(कुछ देर निस्तब्धता)

क्रान्तिचन्द्र : जमींदार और किसान के हित एक-दूसरे के ठीक विरुद्ध हैं। दोनों एक-दूसरे का हित-साधन कर ही नहीं सकते। जो जमींदार डींग मारता है वह लुटेरा और अधिक लूटने और खून चूसने का इच्छुक। हम किसान अधिक संख्या में हैं। जिधर अधिक संख्या होती है वही बल। हमने न सच्ची वस्तुस्थिति समझी है और न अपना बल पहचाना है। शत्रु को मित्र मान, उससे मित्र का-सा व्यवहार, सच्ची वस्तुस्थिति को न पहचानना नहीं तो और क्या है? बल रहते हुए भी अपने को निर्बल समझने से अधिक कौन-सी भूल हो सकती है? जमींदार हमारा शत्रु है, सबसे बड़ा शत्रु। भक्षक और भक्ष्य का कैसा व्यवहार? उनके आपस में कैसे प्रेम? और अपना सच्चा स्वरूप पहचानकर, अपना बल जानकर, यदि हम सब एक होकर इस भोज में सम्मिलित न हों तो जमींदार हमारा क्या कर सकता है? (कुछ रुककर सबकी ओर एक दृष्टि घुमा) मैं कहता हूँ इससे अच्छा अवसर मिल नहीं सकता, जब हम जमींदार को बता दें कि तुम और हम यथार्थ में मित्र नहीं, शत्रु हैं। तुम्हारा हमारा कोई व्यवहार नहीं, तुम्हारे हित और हमारे हित एक-दूसरे के ठीक विपरीत हैं। अब उन्हें पहचान लिया है। अपने-आपको भी हमने जान लिया है। हम अपने रास्ते चलेंगे, तुम अपने रास्ते चलो। तुम एक हो, हम करोड़ों। एक का सातों का सुख भोगना और करोड़ों को अन्न के लिए 'त्राहि-त्राहि' और 'पाहि-पाहि' करना, वस्त्रों के बिना नंगे घूमना, घरों के बिना वृक्षों के नीचे पड़े रहना, यह सदा सम्भव नहीं। तुमने वर्षों नहीं, युगों से हमें लूटा है, हमारा खून पीकर स्वयं लाल हुए हो, हम अब धोखा नहीं खा सकते। तुम्हारा नाश करके ही हम सुखी हो सकते हैं। यह सब स्वयं समझ लेने में ही नहीं, उसे बता देने के पश्चात् ही हमारा कार्य ठीक दिशा में हो सकेगा, क्योंकि उस कार्य के मार्ग का प्रधान रोड़ा भय फिर हमारे सामने रह जायगा।

(क्रान्तिचन्द्र चुप होकर सब की तरफ देखता है। कोई कुछ नहीं बोलता।
सब लोग चूरामन की ओर देखते हैं। चूरामन पृथ्वी की तरफ। कुछ देर निस्तब्धता।)

क्रान्तिचन्द्र : *(अत्यन्त क्रोध से खड़े होकर)* जान पड़ता है आप पंचों को सच्ची वस्तुस्थिति समझ सकना, अपने बल को पहचान कर ठीक दिशा में चलना नहीं सम्भव रह गया है; परन्तु मैं जानता हूँ कि किसान जनता की यह दशा नहीं है। आप थोड़े बहुत सम्पन्न हैं न, इस नाममात्र की सम्पन्नता के कारण जीवन में पड़े

हुए सुख के छोटे-छोटे छींटे भी नहीं छोड़े जाते। इन सुखों के छींटों के सूख जाने का भय आपसे अपने भाइयों के गले पर भी छुरी चलवा रहा है। अपने भाइयों के खून से तर खाने की सामग्री भी आप पंच खाने को तैयार हैं, परन्तु याद रखिए, इस खाने में अब आपके गरीब किसान भाई आपका साथ देने वाले नहीं हैं। किसानों की नब्ज, जितनी दूर तक मैं देख सकता हूँ, आप पंच कहने पर भी नहीं। आपकी ज्ञान-शक्ति स्वार्थ के कारण कुण्ठित जो हो गयी है। आप सच्चे पंच रहे ही कहाँ हैं? *(पीछे की दीवाल की दोनों खिड़कियों के निकट जा उनमें से बाहर की ओर देखते हुए)* बाहर की इस अपार किसान जनता के, पिताजी, आप सच्ची चूड़ामणि हो सकते थे, (लौट कर) पर इतना प्रयत्न करने के पश्चात् मुझे आज मालूम हो गया है कि यह आपके लिए सम्भव नहीं, जाने दीजिए, आपके पाप का प्रायश्चित्त आपका पुण्य करेगा। पंच कहे जाने वाले, इक्के-दुक्के कुल्हाड़ी के बेंट, चाहे जमींदार के भोज में सम्मिलित हो जायँ, पर सच्चे किसान कभी भी उस भोज में न जायँगे। वे उन मिठाइयों, उन पूरी-कचौड़ियों, उन साग-रायतों को हाथ भी न लगायेंगे, जो उनके खून को चूसकर बनाये गये हैं। वह सामग्री चाहे आप पंचों के गले उतर जाय, पर सच्चे किसानों के ओंठों का स्पर्श भी न कर सकेगी। *(दाहिनी ओर की दीवाल के दरवाजे के निकट जाते हुए)* और.... और.... स्मरण रखिएगा कि चाहे आप अपने भाइयों की इच्छा के विरुद्ध उसे खा आवें *(रुककर, बड़े ही क्रूर स्वर में आँखों से आग-सी बरसाते हुए)* पर वह अब आपको हजम न हो सकेगी। उसका एक-एक कण आपके उदरों को चीर-चीरकर निकलेगा और..... और.... *(शीघ्रता से बाहर जाता है।)*

चूरामन : *(मानो किसी नींद से जागा हो)* बेटा!.....बेटा!.....ठैर....ठैर....सुन.....सुन तो *(क्रान्तिचन्द्र को न लौटते देख जल्दी से बाहर जाता है।)*

(भीतर बैठे हुए किसानों में खलबली-सी मच जाती है। सभी उठकर दरवाजे की ओर बढ़ते हैं। नेपथ्य में 'क्रान्तिचन्द्र की जय', 'क्रान्ति अमर हो', 'किसानों की जय', 'जमींदार-प्रथा का नाश हो' इत्यादि के बुलन्द नारे सुनायी देते हैं।)

लघु यवनिका

तीसरा दृश्य

(स्थान : रघुराजसिंह के महल की बालकनी **समय :** मध्याह्न)

वही बालकनी है जो पहले दृश्य में थी। सूर्य तो नहीं दिखता, पर यत्र-तत्र उसमें धूप पड़ती हुई दिखायी देती है, जिससे जान पड़ता है कि दिन चढ़ गया है। रघुराजसिंह अकेला बेचैनी से इधर-उधर टहल रहा है। उसके मुख पर उद्विग्नता के भाव झलक रहे हैं। हाथ में उसके वही दूरबीन है, जो पहले दृश्य में थी। अनेक बार ठहरकर दूरबीन से वह पीछे की दरख्तों के परे कुछ देख लेता है। बदहवासी अवस्था में नर्मदाशंकर का हाथ में एक खुली चिट्ठी लिये हुए जल्दी से प्रवेश।

नर्मदाशंकर : राजा साहब! राजा साहब!

रघुराजसिंह : *(टहलना बन्द कर, नर्मदाशंकर की ओर बढ़कर)* कहिए..... कहिए, मैनेजर साहेब, किसानों का कोई पता.....

नर्मदाशंकर : जी हाँ। *(चिट्ठी रघुराजसिंह को देकर) यह पता है।*

रघुराजसिंह चिट्ठी लेकर उसे पढ़ने क्या, आँखों से पानी से लगता है। एक पंक्ति के एक सिरे से दूसरे सिरे तक और एक पंक्ति के बाद दूसरी पंक्ति पर नाचती हुई उसकी आँखों की पुतलियों से उसके हृदय के उद्वेग का पता चलता है। बड़ी-सी चिट्ठी को वह सेकण्डों में पढ़ डालता है। उसे पूरा करते-करते उससे खड़ा नहीं रहा जाता; वह पहले कुरसी पकड़ता है और फिर एकाएक कुरसी पर बैठ जाता है। कुरसी पर बैठकर वह फिर से चिट्ठी पढ़ता है। अब उसका सिर झुक जाता है। नर्मदाशंकर एकटक रघुराजसिंह की सारी मुद्रा को देखता रहता है। कुछ देर निस्तब्धता रहती है।)

नर्मदाशंकर : देखा, राजासाहब, देखा, आपने इन किसानों की बदमाशी को देखा? आप इन पर प्राण देते हैं। इनके थोड़े से लाभ के लिए अपनी ज्यादा-से-ज्यादा हानि करने के लिए तैयार रहते हैं। काम सँभालने के बाद आपने इन बदलावों के लिए क्या नहीं किया? पर.... पर, राजा साहब, लातों के देव बातों से थोड़े ही सीधे रहते हैं। जमींदार की बहन के विवाह-भोज का किसानों द्वारा बहिष्कार! एक भी किसान का न आना! और ऐसी....आह! ऐसी चिट्ठी, बेहूदगी ज्यादा-से-ज्यादा बेहूदगी भरी हुई चिट्ठी भेजना! इन दो कौड़ी के किसानों की यह मजाल! इनकी यह हिम्मत! इनका यह साहस! इनकी यह हिमाकत! ओह! जमींदारों के सिरमौर इस घराने की आज क्या इज्जत रह गयी? दूसरे जमींदार हम पर किस प्रकार हँसेंगे? हमारी कैसी खिल्ली उड़ेगी? हमारा कैसा मजाक उड़ाया जायगा? ओह! ओ.....

रघुराजसिंह : *(एकाएक खड़े होकर, पत्र को देखते हुए)* पर..पर...मैनेजर साहब, 'किसानों के प्रतिनिधि क्रान्तिचन्द्र' ने ठीक तो लिखा है—'भक्षक और भक्ष्य का कैसा व्यवहार?' मेरी गलती थी जो मैं यह समझता था कि किसानों का मैं हित कर सकता हूँ।

जमींदार रहते हुए कोई जमींदार किसानों का हित नहीं कर सकता। मुझे.... तो अब दूसरी ही बात सोचनी है।

नर्मदाशंकर : *(आश्चर्य से) कैसी?*

रघुराजसिंह : *(टहलते हुए)* मैं जमींदार रहना चाहता हूँ तो सच्चा जमींदार रहकर अपना, अपने साढ़े तीन हाथ के शरीर का, अपने छोटे कुटुम्ब का हित करूँ या... या... *(चुप हो जाता है।)*

नर्मदाशंकर : या

रघुराजसिंह : या... या.... इस जमींदारी की तौक को गले से निकाल, जिनके हित की मैं डींग मारता हूँ, उन्हीं का सही, उन्हीं के सच्चे हित में अपना जीवन... अपना जीवन व्यतीत कर दूँ।

नर्मदाशंकर : *(अत्यधिक आश्चर्य से चिल्लाकर)* राजा साहब! राजा साहब.....

(रघुराजसिंह गम्भीर मुद्रा से सिर नीचा कर इधर-उधर टहलने लगता है।
नर्मदाशंकर आश्चर्य से स्तम्भित-सा रघुराजसिंह की ओर देखता रहता है।)

यवनिका

समाप्त

अभ्यास प्रश्न

● समीक्षात्मक प्रश्न

1. सेठ गोविन्ददास का परिचय देते हुए उनके कृतित्व पर प्रकाश डालिए।

2. 'व्यवहार' एकांकी की कथावस्तु संक्षेप में लिखिए।

अथवा

सेठ गोविन्ददास द्वारा लिखित एकांकी 'व्यवहार' का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

3. 'व्यवहार' एकांकी का कथासार लिखते हुए बताइए कि एकांकीकार के अनुसार व्यवहार क्या है?

4. 'व्यवहार' एकांकी के कथा संगठन की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

अथवा

'व्यवहार' एकांकी के कथानक की समीक्षा कीजिए।

5. 'व्यवहार' एकांकी के सर्वश्रेष्ठ पात्र का चरित्र-चित्रण कीजिए।

6. 'व्यवहार' एकांकी के आधार पर रघुराजसिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए।

7. 'व्यवहार' एकांकी के आधार पर नर्मदाशंकर का चरित्र-चित्रण कीजिए।

● लघु उत्तरीय प्रश्न

1. 'व्यवहार' एकांकी के शीर्षक की उपयुक्तता पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।
2. 'व्यवहार' एकांकी के उद्देश्य पर प्रकाश डालिए।
3. 'व्यवहार' एकांकी के द्वारा क्या सन्देश दिया गया है?
4. 'व्यवहार' एकांकी में कितने दृश्य हैं? प्रत्येक दृश्य से पाँच-पाँच सुन्दर वाक्य लिखिए।
5. 'व्यवहार' एकांकी के अनुसार व्यवहार की उचित परिभाषा क्या है?
6. 'व्यवहार' एकांकी के अध्ययन से आपके हृदय पर क्या प्रभाव पड़ा?
7. चूरामन का चरित्र-चित्रण कीजिए।
8. क्रान्तिचन्द्र का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

● वस्तुनिष्ठ प्रश्न

नोट : सही उत्तर के सम्मुख सही ( ) का चिह्न लगाइए–

1. **'व्यवहार' एकांकी का दूसरा दृश्य है–**
   (अ) गाँव के एक मकान का कोठा ( )
   (ब) नगर में रघुराजसिंह के महल की एक बालकनी ( )
   (स) रघुराजसिंह के महल की बालकनी ( )
2. **'व्यवहार' एकांकी में रघुराजसिंह हैं–**
   (अ) मैनेजर ( )
   (ब) जमींदार ( )
   (स) किसान ( )
3. **'कभी नहीं, सिर्फ मर्द बुलाये जाते थे, वे भी चुने हुए घरों के, और घर-पीछे एक आदमी' यह कथन किसका है?**
   (अ) क्रान्तिचन्द्र ( )
   (ब) चूरामन ( )
   (स) नर्मदाशंकर ( )
4. **जमींदार रघुराजसिंह किसानों के हित में काम किया था–**
   (अ) किसानों का लगान माफ कर दिया था। ( )
   (ब) किसानों के लिए सड़क बनवा दी थी। ( )
   (स) किसानों के मकान पक्के करवा दिये थे। ( )
5. **जमींदार के खिलाफ किसानों को भड़काने के लिए जिम्मेदार है–**
   (अ) क्रान्तिचन्द्र ( )
   (ब) चूरामन ( )
   (स) नर्मदाशंकर ( )

❖